कोविड–19 एवं जनसंख्या प्रवासन

–विजय कुमार शुक्ल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर समाजशास्त्र
गन्ना उत्पादक स्नातकोत्तर महाविद्यालय बहेड़ी (बरेली)
ईमेल : vijayshukla1971@gmail.com

Abstract (सार)

विगत कई दशकों से भारत में आन्तरिक प्रवासन की दर लगातार बढ़ रही है। 1991 में जहाँ आन्तरिक प्रवासियों की संख्या जहाँ 232 मिलियन थी वही 2001 में 315 तथा 2011 में बढ़कर 450 मिलियन हो गई। कोविड–19 के समय जहाँ शहरों से रिवर्स माइग्रेशन हुआ और लोग पुनः गॉव को लौट आए। इस तरह गॉव की जनसंख्या में एकाएक वृद्धि हो गई। लेकिन कोविड–19 की लहर खत्म होने के बाद पुनः प्रवासी मजदूर शहरों की और लौट गए। इससे एक ओर यह पता चलता है कि दुर्खीम ने यद्यपि यह सिद्धान्त दिया था कि जैसे–जैसे श्रम विभाजन बढ़ेगा वैसे–वैसे लोग एक दूसरे के ऊपर निर्भर होते जाएगे और समाज में एकाएक परिवर्तन होने से एनामी की स्थिति आ गई, और शहर के नियोजकों ने प्रवासी मजदूरों का साथ नही दिया और मजदूरों को रिवर्स माइग्रेशन करना पड़ा लेकिन गॉव में रोजगार की सुविधाएँ न होने के कारण तथा शहर के नियोजकों द्वारा पुनः बुलावा आने पर प्रवासी मजदूरों को पुनः वापस शहर जाना पड़ा जिससे गॉव की जनसंख्या में फिर से कमी आ गई।

मुख्य शब्द– कोविड–19, रिवर्स माइग्रेशन, श्रम विभाजन, एनामी।

प्रस्तावना

प्रवासन एक प्राथमिक सामाजिक प्रक्रिया है। जैसा कि दुर्खीम ने दिखाया है कि सामाजिक वृद्धि के प्राथमिक चरण में प्रवासनश्रम विभाजन और कार्यो के विशेषीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण कारक था। प्रवासन का शाब्दिक अर्थ है पषुओं और पक्षियों का संचलन। यह एक स्थान से दूसरे स्थान को व्यक्तिगत रूप से समूहों में लोगो के संचलन की ओर संकेत करता हैं। अतः प्रवासन का अर्थ हुआ आवास का परिवर्तन। ऐसे अनेक कारक है जो लेगों को प्रवासन के लिए प्रेरित करते हैं। ये कारक आर्थिक सामाजिक या राजनीतिक हो सकते है।

प्रवासन विषयक कारकों में जनसंख्यात्मक कारक भी महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए आशीष बोस भारत में ग्रामीण से शहरी की और प्रवासन जनसांस्खिकीय परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट करते हैं। दबाव कारक जो ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी होते है, संसाधन का अभाव बेरोजगारी जनसंख्या का अधिक होना जनसंख्याधिक्य सूखा या बाढ़ या ऐसी ही अन्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण होते हैं। शहरों के खिचाव कारकों में रोजगार अवसर, मनोरंजन, शिक्षा सुविधाएँ, व्यापार केन्द्र, संस्थागत प्रतिष्ठान अवसरों की उपलब्धता धर्मनिरपेक्ष वातावरण आदि।

आशीष बोस का मानना है कि दबाव एवं खिचाव कारकों की व्याख्या समग्र जनसांख्यिकीय कारकों के सन्दर्भ में की जानी चाहिए। जनसंख्या में उच्च प्राकृतिक वृद्धि की दशाओं में न सिर्फ ग्रामीण क्षेत्रों में बल्कि शहरी क्षेत्रों में भी (उच्च शहरी जन्मदरों एवं तेजी से गिरती मृत्युदरों के परिणामस्वरूप) दबाव कारक प्रभावी होता है (बोस 1963) बोस इसे प्रति

दबाव कारक कहते है। उन्होंने दर्शाया कि बेहतर रोजगार हेतु शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन करने वाले प्रति 100 व्यक्तियों की दर पर 254 व्यक्ति रोजगार की तलाश में आते है।

कोविड–19 के समय वैसे तो भारत को बहुत से समस्याओं का सामना करना पड़ा सांख्यिकी मंत्रालय के अनुसार वित्त वर्ष 2020 की चौथी तिमाही में भारत की वृद्धि दर घटकर 3.1 प्रतिषत रह गई। बाजार में अस्थिरता आ गई बेरोजगारी में तीव्र बढ़ोत्तरी हुई सरकारी आय में पर्यटन उद्योगों का पतन आतिंथ्य उद्योग का पतन उपभोक्ता गतिविधि में कमी आदि रही। लेकिनकोविड–19 का सबसे अधिक प्रभाव प्रवासी मजदूरों पर पड़ा। कोविड–19 के समय शहरी नियोजकों ने उनका सहयोंग नही किया। उनको भूखे–प्यासे रहकर पैदल, साइकिल, ट्रक, बस या गाड़ी से अपने घर जाना पड़ा। उसमे से कुछ प्रवासी मजदूरों की मृत्यु हो गई और कुछ किसी तरह अपने गॉव पहुँचे। गॉवों मे भी रोजगार के साधन नहोने से बहुत से प्रवासी कोविड–19 की लहर कम होने से पुनः शहरों को लौट गए।

साहित्य का पुनरावलोकन

कोरोना संकट और भारत के वंचित समुदाय कब पटरी पर लौटेगी जिन्दगीः–

जावेद अनीस– 26 मई 2020

जावेद अनीस ने इसमें बताया कि कोविड–19 से प्रवासी मजदूरो की हालत बहुत खराब हुई है। वर्कर्स एक्शन नेटवर्क (स्वान) द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार लॉकडाउन के बाद से शहरों में फसे 89 फीसदी मजदूरों को उनके नियोक्ताओं द्वारा कोई राशि नहीं दी गई।

ए रिपोर्ट आन् काजेज एण्ड कान्सीक्वेन्सेज ऑफ आउट माइग्रेशन फ्राम मिडिल गंगा प्लेन–अर्चना के राय, आर बी भगत, सुनील सरोदे, रेशमी आर एस इन्टरनेशनल इन्स्ट्रीटयूट फार पापुलेशन साइन्सेंज डीम्ड टू बी युनिवर्सिटी मुम्बई– 400088 महाराष्ट्र इंडिया–2021। इस रिपोर्ट ने यह दिखाया गया कि लोग प्रवासन क्यों करते है और उसका क्या परिणाम होता है।

माइग्रेशन एण्ड मोबिलिटी आफ्टर द 2020 पैनडेमिक द इन्ड आफॅ एन एज अगस्त 2020 जेमलेनA– इन्टरनेशनल आर्गेनाइजेशन फार माइग्रेशन (IOM) जेनेवा।

इस आर्टिकिल में यह दर्शाया गया है कि कोविड–19 के बाद पूरे विश्व के जनसंख्यात्मक गतिशीलता में परिवर्तन आया है और प्रवासन के एक युग का अन्त हो गया है।

उद्देश्यः–इस शोध पत्र का उद्देश्य निम्न है–

(1) कोविड–19 से प्रवासन पर पड़ने वाले पभाव को स्पष्ट करना?

(2) प्रवासनकी अवधारणा को स्पष्ट करना?

(3) कोविड–19 के समय प्रवासी मजदूरों को होने वाली समस्याओं को प्रकाश में लाना?

उपकल्पनाएँ–

अध्ययन द्वारा निम्न उपकल्पनाओं का परीक्षण/सत्यापन किया जाएगा।

(1) प्रवासी मजदूरों का सहयोग करने में सेवायोजक उदासीन है ?

(2) प्रवासन अर्थोपार्जन से प्रभावित होता है?

(3) प्रवासन एवं आर्थिक उपलब्धि में प्रत्यक्ष संबंध है?

(4) सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएँ प्रवासन को रोकने हेतु अपर्याप्त हैं ?

अध्ययन पद्धति–

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कोविड–19 एवं जनसंख्या प्रवासन का अध्ययन करना है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश जैसे गोण्डा, बहराइच, बस्ती, गोरखपुर देवरिया आदि से लोग दिल्ली, मुम्बई, गुजरात, चेन्नई, कलकत्ता आदि स्थानों को जाते है। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए बहराइच जिले रनियापुर गोबरही का चयन किया। चूँकि शोधकर्ता इस गॉव का मूल निवासी है और कोविड–19 के समय लोग बाहरी व्यक्तियों से सम्पर्क नहीं करना चाहते थे अतः शोधकर्ता ने अपने ही गॉव चयन किया। रनियापुर गोबरही की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 2908 है। जिसमे से लगभग 800 व्यक्ति विभिन्न शहरो को जीविकोपार्जन हेतु जाते हैं। शोधकर्ता ने अनुसूची तथा टेलीफोनिक साक्षात्कार द्वारा कोविड–19 के समय शहरों में आने वाली समस्याओं तथा गॉव में आने पर होने वाली समस्याओं और सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं से लाभान्वित होने की सूचनाओं को एकत्र किया।

तालिका(1) कोविड–19 के समय प्रवासी मजदूरों की कार्य करने की दशाएँ

क्रम संख्या	कार्य करने की दशाएँ	विवरण	प्रतिशत
		संख्या	प्रतिशत
1.	कोई काम नही	80	80
2.	1–3 घण्टे काम	15	15
3.	3–5 घण्टे काम	3	3
4.	5–8 घण्टे काम	1	1
5.	8 घण्टे से अधिक	1	1
योगः–		**100**	**100**

निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है कोविड–19 के समय रनियापुर गोबरही के 80 प्रतिशत प्रवासी मजदूरों को कोई काम नहीं मिला था। 15 प्रतिशत को सिर्फ 1–3 घण्टे ही काम मिला था। उनके सेवायोजको ने उन्हें कोई सहयोग नहीं दिया जबकि प्रवासी मजदूर उनके व्यापार को बढ़ाने में पूरा सहयोग दिए थे उनकी नकद मजदूरी भी नहीं दी गई।

तालिका(2)प्रवासन हेतु उत्तरदायी कारक

क्रम संख्या	प्रवासन हेतु उत्तरदायी कारक	विवरण	
		संख्या	प्रतिशत
1.	मजदूरी	85	85
2.	नौकरी	3	3
3.	व्यवसाय	10	10
4.	अन्य	2	2
योगः–		**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि रनियापुर गोबरही के प्रवासी मजदूर दिल्ली और मुम्बई जैसे शहरो में 85 प्रतिशत मजदूरी के लिए जाते है जबकि कुछ I.T.I डिप्लोमाधारी कुछ कारखानों में नौकरी के लिए 3 प्रतिशत जाते है। 10 प्रतिशत प्रवासी सब्जी मण्डी और अन्य जगहो पर जैसे ठेला लगाना, रिक्शा, टेम्पो आदि चलाने जाते है। जबकि 2 प्रतिशत प्रवासी अन्य

कार्य से दर्जीगीरी, पापड़ बनाने आदि के कार्यो हेतु जाते है।

तालिका(3) प्रवासियों का मासिक आय के आधार पर विभाजन

क्रम संख्या	मासिक आय	विवरण	
		संख्या	प्रतिशत
1.	5000 से कम	NIL	0
2.	5000–7500	15	15
3.	7500–10000	38	38
4.	10000–12500	43	43
5.	12500–15000	2	2
6.	15000 से अधिक	2	2
योगः–		**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रवासियों की अधिकतम आय 10000–12500 के बीच है प्रवासी शहरों मे मजदूरी, नौकरी और व्यापार करके अपना तथा अपने परिवार का अर्थोपार्जन करते हैं। गॉवो में मनरेगा जैसी योजनाऍ है लेकिन उसमें मात्र 100 दिन ही काम मिलता है तथा यदि गॉवों में यदि काम भी मिलता है तो नकद मजदूरी नहीं मिलती है इसलिए लोग शहरों को अर्थोपार्जन हेतु जाते है।

तालिका(4) कोविड–19 के समय प्रवासियों के औसत मासिक आय का नुकसान–

क्रम संख्या	औसत मासिक आय का नुकसान	विवरण	
		संख्या	प्रतिशत
1.	5000 से कम	18	18
2.	5000 से 10000	57	57
3.	10000–15000	16	16
4.	15000–20000	9	9
योगः–		**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रवासियों की औसत मासिक आय का नुकसान अधिकतम 5000–10000 के बीच हुआ। उनको काम कम मिला। किसी को तीन घंटा कोविड–19 के समय काम मिला किसी को कोई काम नहीं मिला जिससे प्रवासियों की दशा बहुत दयनीय हो गई और वे भुखमरी के शिकार होकर गॉव लौटने को मजबूर हुए।

तालिका(4)शासकीय योजनाओं से लाभान्वित

क्रम संख्या	लाभान्वित	प्रवासियों की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	11	11
2.	नहीं	87	87
3.	तटस्थ	2	2
योगः–		**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं जैसे मनरेगा, स्टार्टअप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम, स्टार्टअप इण्डिया सीड फंड योजना, दीनदयाल अंतोदय,

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिषन जैसी योजनाओं से प्रवासियों को कोई लाभ नहीं मिल पा रहा है सिर्फ 87 प्रतिशत लोगों को ही सरकार द्वारा चलाई योजनाओं से लाभ मिल पा रहा है।

Finding (जांच परिणाम)

प्रस्तुत शोधपत्र से शोधकर्ता केा निम्न जांच परिणाम प्राप्त हुए?

(1) रनियापुर गोबरही के प्रवासियों के अध्ययन से शोधकर्ता को पता चला कि प्रवासियों के सेवायोजकों ने प्रवासियों को कोविड–19 के समय न तो उनकी मजदूरी दिया न ही किराया, जिससे प्रवासियों को भूखे पेट पैदल या साइकिल से गॉव लौटना पड़ा।
उपर्युक्त विवरण से अध्ययन की उपकल्पना संख्या प्रथम सिद्ध होता है।

(2) शोधकर्ता को प्रवासियों के अध्ययन से यह भी पता चला कि कोविड–19 के समय उनको किसी–किसी दिन एक घण्टा से 3 घण्टे तक काम मिल जाता था, कभी–कभी वह भी नहीं मिल पाता था। इससे प्रवासियों की स्थिति दयनीय हो गई। आय न होने से प्रवासियों को गॉव लौटने को मजबूर होना पड़ा।
उपर्युक्त विवरण से अध्ययन की उपकल्पना संख्या द्वितीय सिद्ध होता है।

(3) शोधकर्ता को प्रवासियों के अध्ययन से यह भी पता चला कि कोविड–19 के समय उनके मासिक आय में बहुत नुकसान हुआ जिससे उन्हें गॉव लौटने पर मजबूर होना पड़ा, अतः प्रवासन का प्रत्यक्ष संबंध आर्थिक उपलब्धि से है। जब तक शहरों में उन्हें रोजगार मिलता रहा तब तक वह शहरों में रहे लेकिन आय का नुकसान होने परवे पुनः गॉव लौट आए।
उपर्युक्त विवरण से अध्ययन की उपकल्पना संख्या तृतीय सिद्ध होती है।

(4) गॉवों में सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं जैसे मनरेगा, स्टार्टअप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम स्टार्टअप इण्डिया सीड फंड योजना, दीन दयाल अंतोदय येजाना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन आदि योंजनाओं से प्रवासियों को काई लाभ नहीं मिल पा रहा है प्रवासियों से पता करने यह भी पता चला कि बैंकों से कर्ज या क्रेडिट कार्ड बिना रिष्वत दिए नहीं हो पाता हैं। बैंकों से उन्ही लोगो को लाभ मिल रहा है जो रिश्वत देने में सक्षम है। उससे न तो वे स्टार्टअप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम या अन्य कोई योजनाओं से लाभ ले पा रहे है और उन्हें प्रवासन के अलावा अन्य कोई मार्ग नहीं दिखाई पड़ रहा है। इसलिए कोविड–19 की लहर कम होते ही अधिकतर प्रवासी पुनः शहरों को लौट गए और गॉवों की जनसंख्या पुनः कम हो गई।
उपर्युक्त विवरण से उपकल्पना संख्या चतुर्थ सिद्ध होती है।

निष्कर्ष :–उपर्युक्त शोध पत्र से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए।

(1) कोविड–19 के समय प्रवासी मजदूरों का उनके सेवायोजकों द्वारा कोई मदद नहीं किया गया, जिससे दरखाइम के सावयवी एकता का विद्धान्त असत्य साबित हो रहा है। जिसमें उन्होंने कहा था कि जैसे–जैसे श्रम विभाजन बढ़ेगा और लोग एक दूसरे से सामानों और सेवाओं के लेन–देन के लिए आश्रित होते जाएगे। जबकि हरबर्ट मार्क्यूज का सिद्धान्त कि कार्य एक अमानवीय गुलामी है सिद्ध हो रहा है।

(2) सरकार द्वारा प्रवासन को रोकने के लिए बहुत सी योजनाएँ चलाई जा रही है लेकिन पूर्वी उत्तर प्रदेश से प्रवासन रूक नहीं पा रहा है। इससे यह पता चलता है कि इन

योजनाओं का सही क्रियान्वयन नही हो पा रहा है। सरकारी तंत्र लूट–खसोट का अड्डा बन कर रह गए हैं।

(3) कोविड–19 के समय प्रवासी मजदूरों को लाने को ध्यान में न रखकर लॉकडाउन लगा दिया और कह दिया गया कि जो जहाँ पर है वहीं पर रहे, इससे प्रवासी मजदूरों के लिए अमानवीयता की स्थिति पैदा हो गई।

BIBLIOGRAPHY

1. Durkheim, Emile The division of Labour in society, trans George Simpson, Macmillan, 1933.
2. Singh Kanika (6 April 2020) "Coronavirus outbreak ensuring water, Hygeine facilities for migrant labours can safegard millions standard during shutdown".
3. Hatton, T (2016) "Immigration Public Opnion and the recession in Europe". Economic Policy, Valume 31/86 PP 205-246.
4. CMTE Economic outlook, "April 2020 Review of Indian Economy, Financial market Performance". 5 April 2020.
5. Dandekar A, GHAI R, Migration and reverse migration in the age of Covid-19 economic and political weekly 2020 55(19) PP 28-31.
6. Bosh Ashish (2006) Beyond demography, Dialouge with people, B R Publishing Corporation Delhi.

●